2019

HINDI

[Honours]

PAPER – II

Full Marks : 90

Time : 4 hours

The figures in the right hand margin indicate marks

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable

Illustrate the answers wherever necessary

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 15×2

   (*क*) 'कबीर मात्र भक्त नहीं हैं, वे प्रखर समाज सुधारक भी हैं' — सोदाहरण विवेचन कीजिए ।

   (*ख*) नागमती वियोग खण्ड के आधार पर नागमती के विरह–वर्णन की समीक्षा कीजिए ।

   (*ग*) सूरदास के काव्य–सौष्ठव का मूल्यांकन कीजिए ।

(घ) बिहारी की नीति और भक्ति पर विचार कीजिए ।

(ङ) ''घनानन्द प्रेम के पीर के कवि हैं'' — युक्तियुक्त उत्तर दीजिए ।

2. किन्हीं *चार* काव्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : 8×4

(क) साधो, देखो जग बौराना ।
साँची कहौ तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना ।
हिंदू कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना ।
आपस में दोऊ लड़े मरतु हैं, मरम कोई नहिं जाना ।
बहुत मिले मोहिं नेमी धर्मी, प्रात करैं असनाना ।
आतम-छोड़ि पषानै पूजैं, तिनका थोथा ज्ञाना ।
आसन मारि डिंभ धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना ।
पीपर-पाथर पूजन लागे, तीरथ-बर्त भुलाना ।
माला पहिरे टोपी पहिरे, छाप तिलक अनुमाना ।
साखी शब्दै गावत भूले, आतम खबर न जाना ।।

(ख) कुहुकि कुहुकि जसि कोइलि रोई । रक्त ओसु घुघुची बनबोई ।
पै करमुखी नैन तन राती । को सिराब बिरहा दुख ताती ।
जहं जहं ठाढ़ि होइ बनबासी । तहं तहं होई घुघुचिन्ह कै रासी ।
बुंद बुंद महँ जानहुँ जीऊ । कुंजा गुनि करहिं पिउ पीऊ ।
तेहि दुख उहे परास निपाते । लोहू बूड़ि उठे परभाते ।

राते बिंब भए तेहि लेहू । परवर पाक फाट हिय गोहूँ ।
देखिअ जहाँ सोई होइ राता । जहाँ सो रतन कहै को सा ।
ना पावस ओहि दसरें, न हेवंत बसन्त ।
ना कोकिल न पपीहा, कहि सुनि आवहि कंत ।

(ग) संदेसनि मधुबन कूप भरे ।
अपने तौं पठवत नहिं मोहन, हमरे फिरि न फिरे ।
जितै पथिक पठए मधुबन कौं, बहुरि न सोध करें ।
कै वै स्याम सिखाई प्रमोधे, कै कहुं बीच मरे ।
कागद गिरे मेघ, मसि खूटी, सद दव लागि जरे ।
सेवक 'सूर' लिखन को आंधौ, पलक कपाट अरे ।

(घ) कनकु कनक तैं सौगुनौ मादकता अधिकाइ ।
उहिं खाऐं बोराइ नर, इहिं पाऐं बोराइ ।।
दृग उरझत, टूटत कुटुम् जुरत् चतुर-चित प्रीति ।
परति गाँठि दुरजन-हियै दई नई यह रीति ।।

(ङ) अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं ।
ताहँ साँचे चलैं तजि आपुनपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं ।
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ इत एक तें दूसरो आँक नहीं ।
तु कौन सौं पाटी पढ़े हौ लला मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं ।।

(च) सीस जटा उर बाहु बिसाल विलोचन लाल तिरीछी सी भौहैं ।
तून सरासन बान घरे तुलसी बन मारग में सूठि सोहैं ।।
सादर बारहि बार सुभाय चितै तुम त्यों हमरो मन मोहैं ।
पूछति ग्रामवधू सिय सों कहो साँवरो सो सखि रावरो को हैं ।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं *आठ* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×8

(*क*) 'कबीर' नामक पुस्तक के लेखक का नाम लिखिए ।

(*ख*) जायसी किस काव्य परम्परा के कवि थे ?

(*ग*) 'रामचरितमानस' किस भाषा में लिखा गया है ?

(*घ*) 'हरित हरित हार हेरत हियो हरत' — पंक्ति में कौन सा अलंकार हैं ?

(*ङ*) 'नहिं परागु नहिं मधर मधु, नहिं विकास इहिं काल ।
अली, कली ही सौं बंध्यों, आगैं कौन हवाल' — पंक्ति किस राजा को लिखकर दी गयी थी ?

(*च*) घनानन्द की प्रेमिका का क्या नाम था ?

(*छ*) भूषण रीतिकाल के किस धारा के कवि थे ?

(*ज*) बिहारी ने 'नागरि' शब्द किसके लिए प्रयोग किया है ?

(*झ*) सूरदास की प्रमुख रचना का क्या नाम है ?

(*ञ*) 'पद्मावत' की भाषा क्या है ?

4. निम्नलिखित में से किन्हीं *पाँच* पर टिप्पणी लिखिए : 4×5

(*क*) कबीर की भक्ति-भावना

(ख) जायसी और लोकसंस्कृति

(ग) कबीर और तुलसी के राम में अन्तर

(घ) भ्रमरगीत का गीत-सौष्ठव

(ङ) केशव की काव्य-भाषा

(च) बिहारी की श्रृंगार-भावना

(छ) घनानंद का विरह-वर्णन

(ज) भूषण की काव्य चेतना